शिव, शिवत्व व शिव तत्व

'शिव' शब्द के 'श' अक्षर में सुखशयन का समाधि सत्य है। 'इ' में त्रितापहरणी शक्ति है। 'व' अक्षर में अमृतवर्षा समायी है। तभी तो शिव में कल्याण की शाश्वतता और निरंतरता है। यह सत्य, शिव शब्द का सम्यक अर्थ है। शिव में जीवन और जगत, दोनों हैं। जब जीवन व जगत के प्रत्येक घटनाक्रम में अपने कल्याण की शाश्वतता व निरंतरता की सतत् अनुभूति होने लगे, तब समझो कि शिव तत्त्व की अनुभूति होने लगी।

शिव में विवेक व वैराग्य, दोनों सम्पूर्णता में समाविष्ट हैं। शिव नाम स्मरण होता रहे, तो स्वतः ही विवेक का तृतीय नेत्र खुल जाता है। साथ ही अंतश्चेतना दुर्गुणों, दुष्प्रवृत्तियों से विमुख होकर वैराग्य की ओर अग्रसर हो जाती है। शिव ही सृजन व संहार हैं। उनके लास्य में सृष्टि और उसकी समस्त सकारात्मकता का सृजन है, तो उनके तांडव में सम्पूर्ण नकारात्मक असुरता का संहार। शिव में शास्त्र व संस्कृति, दोनों समाये हैं।

शिव आदि हैं, मध्य हैं और अंत हैं। वही नटराज हैं। नटराज के नृत्य में, शिव सूत्रजाल में ब्रह्माण्ड का छंद, अभिव्यक्ति का स्फोट सभी कुछ छिपा है। वही कैवल्य हैं, निर्वाण हैं, निर्बीज की महासमाधि हैं। मानवीय अज्ञान में बद्ध जीव की अंतिम परिणति है - शिव, शिवत्व व शिव तत्त्व* में समर्पण।

'अखण्ड ज्योति' से साभार
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य

*पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य - पूज्य गुरुदेव शिव, शिवत्व व शिव तत्त्व के जीवन्त रूप थे।

-जगदीश चन्द्र पन्त

यस्मात्परं नापरमस्ति किंचिद्, यस्मान्नाणीयो न ज्यायोस्ति कश्चित्।

वृक्ष इव स्तब्धो दिवि तिष्ठत्येकः, तेनेदं पूर्णं पुरुषेण सर्वं ॥

अध्याय 3 मंत्र 9 श्वेताश्वतर उपनिषद

अर्थात

जिनसे श्रेष्ठ दूसरा कुछ भी नहीं है, जिनसे बढ़कर कोई न तो अधिक सूक्ष्म है और न महान ही है तथा जो अकेले ही वृक्ष की भांति निश्चल भाव से प्रकाशमय आकाश में स्थित हैं, उन परम पुरुष परमेश्वर शिव से यह सम्पूर्ण जगत परिपूर्ण है ।

योग का लक्ष्य:

मानवी चेतना सापेक्ष चेतना है। इसकी सापेक्षता को विनष्ट कर देना ही सारे योगों का एकमात्र लक्ष्य है। जब मन की उपाधि का तिरोधान हो जाता है, तभी चेतना अपनी परमावस्था को प्राप्त करती है - जहाँ किसी वस्तु का अस्तित्व नहीं रहता, वरन अस्तित्व का ही 'अस्ति तत्व' रहता है, जहाँ किसी वस्तु विशेष के अस्तित्व का ज्ञान नहीं होता, वरन परम अस्तित्व का ही परमज्ञान होता है, और जहाँ विभिन्न वस्तुओं के ज्ञान का आनंद नहीं होता वरन परम अस्तित्व के पारमार्थिक ज्ञान का परमानंद प्राप्त होता है। यही सच्चिदानंद स्वरूप का साक्षात्कार है, यही ब्रह्म अथवा सनातन सत्य है, यही मुक्ति अथवा मोक्ष है, इसके ज्ञान से ही मनुष्य परम पुरुषार्थ की प्राप्ति कर सकता है।

तमेय विदित्वाति मृत्युमेति नान्या पन्था विद्यतेऽयनाय।

- (श्वेताश्वतर, 3-8)

"उसको जान लेने से ही मनुष्य मृत्यु का अतिक्रमण करता है। अन्य कोई दूसरा मार्ग नहीं है।"

-पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

"सत्यम ब्रुयात् प्रियम ब्रुयात् न ब्रुयात् सत्यम अप्रियम,
प्रियं च न अनृतम् ब्रुयात् ऐश धर्मः सनातनः"

- मनुस्मृति, अध्याय 4 श्लोक 138